संवाद

सर्कस की 'नई' दुनिया की झलकियां

(गाइनॉइड्स और वल्काना महिला सर्कस)

मारी-ऐन्द्री रॉबिटैल

क्यूबॅक, कनाडा में नब्बे के दशक में सर्कस कलाकार होना कोई आम पेशा नहीं था परंतु मॉन्ट्रियाल में *राष्ट्रीय सर्कस स्कूल* की स्थापना ने इसे एक संभावना का रूप दे दिया था।

अनेक वर्षों तक अपने विश्वविद्यालय की दौड़ में हिस्सा लेने वाली नामी टीम की सदस्य रहने के बाद मैं एक पेशेवर प्रशिक्षण कार्यक्रम में नृत्य तथा सर्कस स्कूल में अपना कलात्मक विकास करने लगी।

मैं अपने आपको भाग्यशाली समझती हूं कि मैं एक ऐसे देश और परिवार में पली बढ़ी, जहां यह मानना संभव था कि मैं जो चाहूं वह बन सकती हूं। मेरी महत्वाकाक्षांओं की पूर्ति में मेरा लड़की होना कोई बाधा नहीं था। मेरे माता पिता ने मुझे सिखाया कि मैं दिमाग खुला रखूं और जीवन मूल्य तय करते समय परम्पराओं की जगह अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करूं। मेरे माता-पिता दृश्य कलाओं से जुड़े थे। अस्सी के दशक में जब मैं किशोरावस्था से गुज़र रही थी मेरी मां ने मुझे मडोना के संगीत का कैसेट दिया। मेरे कई फ़ैसलों पर मडोना का प्रभाव पड़ा जिन्होंने मेरी जीवन दिशा तय की। मैं भी मनोरंजन उद्योग से जुड़ गई।

लगभग एक दशक तक मैं स्वीडन से चीन, ग्रीनलैण्ड से मेसेडोनिया तक के दौरे करती रही। विभिन्न लोगों और संस्कृतियों को जानना मेरे लिए बहुत शिक्षाप्रद था। हालांकि मेरी उम्र कम थी और मैं बहुत सी बातें नहीं समझती थी लेकिन मुझे यह अहसास था कि मैं सही जगह पर, सही लोगों के साथ हूं और मैं यही जीवन जीना चाहती हूं।

फ़ोटो- गाइनॉइडस प्रोजेक्ट

सर्कस का काम जैसा चमक — दमकपूर्ण दिखाई देता है वैसा है नहीं। मिट्टी के बीच लगे तम्बुओं में रहना, सर्दी में ठण्डी गाड़ियों में सफ़र करना, अनिश्चित आमदनी। इस क्षेत्र में होड़ भी कम नहीं है। हमें लगातार दूसरों से कुछ अलग, कुछ बेहतर पेश करना होता है। यह काम ख़तरों से भरा हुआ है। एक छोटी सी चूक पेशेवर जीवन को या फिर जीवन को ही ख़त्म कर सकती है। किसी प्रकार का बीमा न होना इस पेशे को तलवार की धार पर चलने जैसा बना देता है। इस सबके बावजूद मैं कहूंगी कि मेहनत और नम्रता सीखने और अपना सर्वोत्तम लोगों में बांटने के लिए इससे बेहतर जगह मुझे कहीं नहीं मिली।

सालों की यात्राओं और प्रदर्शनों के बाद मैं मंच से पृष्ठभूमि की ओर चली गई। मैंने अध्यापक, प्रशिक्षक, कलात्मक सलाहकार और यहां तक कि प्रतिभा खोजी का काम भी किया। मैंने सर्कस के हर विभाग में काम करने का अनुभव प्राप्त किया। उम्र और अनुभवों के साथ मुझे समझ में आने लगा कि जो सामान्य रूप से होता है, ज़रूरी नहीं कि वह सही और अच्छा हो।

मैंने पाया कि सर्कस की गतिविधियों के सभी पहलुओं में औरतों की भागीदारी कम होती है। उन्हें कामुक रूप में वस्तु की तरह इस्तेमाल करके छोटा बनाया जाता है जो किसी तरह मंज़ूर नहीं किया जा सकता। हमें अपने आपको सिर्फ़ दूसरों को लुभाने, खुश करने और उनकी कामनाओं का पात्र बनने तक सीमित नहीं करना चाहिए बल्कि आवाज़ उठानी चाहिए। औरतों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल होने,

वल्काना महिला सर्कस

फ़ोटो- एन.एफ.जी. फ़ोटोग्राफ़ी

विश्व भर में नारीवादी रचनात्मकता ने अनगिनत बदलावों को प्रेरणा दी है और अनेक समुदायों को शिक्षित और सशक्त बनाया है। नारीवादी कला आंदोलन के पचास सालों के बाद आज भी महिला रचनात्मकता सामाजिक और राजनैतिक बदलावों को प्रोत्साहित कर रही है।

ऐसी ही कोशिश ब्रिसबेन ऑस्ट्रेलिया की *वल्काना महिला सर्कस* कर रही है। वल्काना, सर्कस कला के माध्यम से औरतों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्त करने के अवसर देकर सशक्त कर रही है।

वल्काना की शुरूआत 1995 में इस सोच के आधार पर की गई थी कि जब औरतें, केवल औरतों के बीच रहते हुए खुले और सहयोगी माहौल में हुनर सीखतीं हैं और उसका प्रदर्शन करती हैं तो उनके शारीरिक व भावनात्मक अनुभव बिल्कुल अलग होते हैं। वे खिलती हैं, निखरती हैं और आत्मविश्वासी बनती हैं।

वल्काना एक ऐसा समूह है जहां सशक्त महिलाओं की अगुवाई में युवा प्रशिक्षार्थी सर्कस की सभी विभिन्न कलाओं के ज़रिए अपने भीतर छिपी शारीरिक, मानसिक और रचनात्मक ताक़त को ढूंढ कर बाहर लाती हैं। रोज़ाना वे अपनी सीमाओं को तोड़कर कुछ आगे बढ़ती हैं।

यहां पर अनेक नई और नायाब गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जाता है जैसे ट्रेपीज़, लायरा, क्लाउड स्विग, हुलाहूप, फायर स्विंग, कलाबाज़ियां और एरियल डान्स। पर वल्काना केवल सीखने, प्रशिक्षण हासिल करने और कला प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं है।

यहां हर कलाकार को अपनी सोच और कल्पना के अनुसार काम करने की आज़ादी है। अपने लक्ष्य खुद चुनने की आज़ादी है। इस काम में उन्हें सभी का सहयोग और प्रोत्साहन मिलता है। सर्कस से जुड़ी सभी कलाओं को यहां आने वाली औरतें अपनी मर्ज़ी और हुनर के अनुसार इस्तेमाल कर सकती हैं। इसी सोच को आगे ले जाते हुए कई औरतों ने हैरतंगेज़ प्रदर्शन और शो तैयार किए हैं। इससे न सिर्फ़ उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है बल्कि उनका हुनर भी और विकसित होता है।

हाल ही में *वल्काना* के तीन कलाकारों, ग्रेस, शैनन और मायू ने एक कार्यक्रम तैयार किया है जिसका नाम है— *म्यांऊ-बिल्ली और चीज़केक*। इस शो में यह दिखाया गया है कि एक ही घर में रहने वाली तीन लड़कियां, रोज़मर्रा के घरेलू कामों जैसे खाना पकाने, तैयार होने या केक खाने को कितने अलग-अलग ढंगों से कर सकती हैं। इस पूरे शो में इन कलाकारों ने सर्कस की विभिन्न तकनीकों की मदद से हर किरदार की खासियत को दर्शकों के सामने उभारने की कोशिश की है। हास-परिहास के ज़रिये तीनों किरदारों की अनोखी और विचित्र आदतों को भी दिखाने की कोशिश की गई है।

इसी तरह के अनेक मौके *वल्काना* के प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान किये जाते हैं। शो तैयार करने के लिए उन्हें आवश्यक सामान, उपकरण, कलात्मक सहयोग और हर संभव मदद भी समूह की तरफ से दी जाती है। इन अवसरों और सुविधाओं के चलते औरतों को कुछ नया करने का हौसला और आत्मविश्वास मिल पाता है। वल्काना के सकारात्मक प्रभाव ने अनेक औरतों के जीवन को छुआ है।

लेख का यह हिस्सा वल्काना सर्कस टीम ने लिखा है।

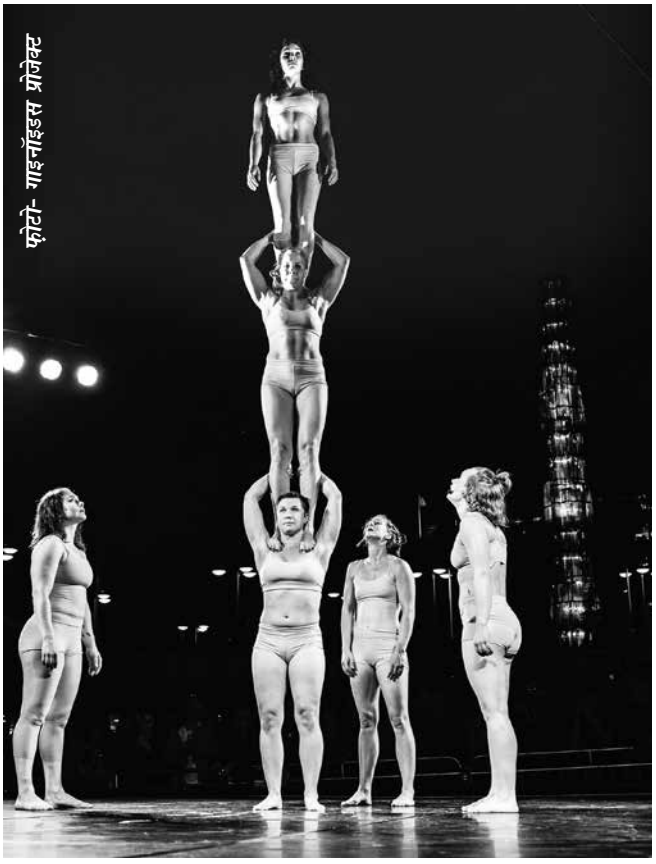
फ़ोटो- गाइनॉइड्स प्रोजेक्ट

अपनी महत्वाकांक्षा के अनुसार भूमिका तय करने की आज़ादी होनी चाहिए।

उन्हें समान अवसर मिलने चाहिए कि वे आने वाली पीढ़ी के सामने वैकल्पिक आदर्श प्रस्तुत कर सकें। इन सब बातों को देख कर मन में बहुत सी आकांक्षाओं के साथ मैंने अपनी *गाइनॉइड्स परियोजना* शुरू की।

इस परियोजना का उद्देश्य सर्कस के तौर-तरीक़ों को एक औरत के नज़रिए से समझना है। अपने जीवन में मुझे वही करने की इच्छा होती थी जिसकी इजाज़त नहीं होती थी। *राष्ट्रीय सर्कस स्कूल* में भी मुझे तनी रस्सी का करतब करना था जबकि मैं चीनी खम्भे का करतब सीखना चाहती थी। उस समय यह करतब सिर्फ़ पुरुषों के लिए होता था। दो साल इधर-उधर की चीज़ें करने के बाद मैंने चीनी खम्भे पर अपना एकल कार्यक्रम पेश किया और उस समय की स्थापित जेंडर भूमिका की बंदिश को तोड़ा।

सर्कस में औरतों की भूमिका पूर्व निश्चित होती है। वे क्या करेंगी, कैसे करेंगी, मंच पर किस तरह पेश होंगी और ही साथ सर्कस के पदानुक्रम में उनका दर्जा क्या होगा। मालिक चाहते हैं कि हम एक ख़ास ढंग से प्रदर्शन करें, दर्शक चाहते हैं कि हम एक ख़ास ढंग से दिखाई दें और हम स्वयं भी इसी दबाव में रहती हैं कि उनकी उम्मीदों को पूरा करके तालियां बटोरें, परिणाम स्वरूप हम उसी घिसी-पिटी छवि और भूमिका को दोहराती रहती हैं।

गाइनॉइड्स परियोजना का उद्देश्य सर्कस के परिवेश में औरतों की वैकल्पिक भूमिकाओं को बढ़ावा देना और नारीवादी कार्यनीतियां लागू करना है। यहां हम दो तरह से काम कर रहे हैं। एक तो शैक्षणिक शोध कार्य जिसके तहत स्त्रियों का अनुपात, उनका दर्जा और उनके अपने अनुभव आदि का अध्ययन किया जा रहा है। दूसरी ओर हम कलात्मक शोध प्रक्रिया भी विकसित कर रहे हैं। इसके अन्तर्गत विश्वस्तर के ऐसे प्रयोगात्मक कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं जिनमें विभिन्न देशों की चुनी हुई सर्कस कलाकार महिला शक्ति को केन्द्र में रखकर कलात्मक प्रस्तुतियां देती हैं।

जब मैंने अपने काम के बारे में सबको जानकारी दी तो अनेक प्रतिक्रियाएं आईं। सर्कस समुदाय के सभी सदस्यों ने बड़े जोश से इसका स्वागत किया। अनेक कलाकारों ने इससे जुड़ने के लिए मुझसे सम्पर्क किया। शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत हमने प्रश्नावलियां बांटी और पहले साठ घंटों में ही सौ लोगों के जबाब आ गए। ये सभी जवाब इस बात के पक्ष में थे कि सर्कस में औरतों के मुद्दे पर गंभीर कार्य की ज़रूरत है।

अतः 2013 में मैंने सर्कस में एक महिला संगठन की शुरुआत की जहां वे आपस में मिल कर उनके श्रम से जुड़े मुद्दों पर बातचीत कर सकें और खुद अपने हालात की कमान संभाल सकें।

मेरा मानना है कि सर्कस में औरतों की जो छवि पेश की जाती है उसके लिए हम ख़ुद ज़िम्मेदार हैं और उसे सुधारने की दिशा में पहला क़दम है, जागरूकता। हमें साथ में जुड़ कर, चर्चा करके काम करना चाहिए सर्कस एक ऐसा बेहतरीन माध्यम है, यह दिखाने का कि कुछ भी संभव है। चलिए अब हम औरतों के प्रतिनिधित्व और आज़ादी के उपकरण की तरह इसे इस्तेमाल करें।

मारी-ऐन्द्री रॉबितैल *गाइनॉइड्स परियोजना की कला निदेशक हैं। वे 'सर्कस' का पाठ्यक्रम भी पढ़ाती हैं।*

मूल अंग्रेज़ी से अनुवाद- वीणा शिवपुरी